International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

आगरा शहर का इतिहास – एक संक्षिप्त अवलोकन

डॉ0 वन्दना कलहंस
एसोसिएट प्रोफेसर
विभाग–इतिहास,
बी0एस0एन0वी0, पी0जी0कालेज,
लखनऊ।

यमुना नदी के तट पर बसा आगरा विश्व में ताजनगर के रूप में अपना विशिष्ट स्थान रखता है। आगरा शहर की नींव 1504 में दिल्ली के अफगान सुल्तान सिकन्दर लोदी ने डाली थी। सिकन्दर लोदी ने इटावा, बयाना, कोइल, ग्वालियर और धौलपुर के प्रांतीय शासको को अपने अधीन करने के लिये इस शहर की नींव डाली तथा उसको अपनी राजधानी बनाया।[1] 1638 तक आगरा लगातार भारत की राजधानी बना रहा।[2] आगरा शहर भारतीय मानचित्र के 28′ 45′ अंक्षाश पर स्थित है। यह शहर सर्वाधिक विशाल, खुला हुआ एवं बिना दीवार का था। 1556 में मुगल सम्राट अकबर द्वारा अपने निवास के लिए चुने जाने तक यह मात्र एक गॉव था तथा बयाना की सीमा क्षेत्र में पड़ता था। अकबर ने यमुना नदी के किनारे एक शानदार किले निर्माण करवाया। पूर्व में आगरा बृज मण्डल का एक महत्वपूर्ण भाग था। काशी, अयोध्या आदि महत्वपूर्ण नगरों से आगरा का सम्पर्क था। बृज की महत्वता का प्रमुख कारण था कि यहॉ भगवान श्री कृष्ण का जन्म हुआ व सारा बचपन बीता। कहा जाता है कि प्राचीन काल में श्रीकृष्ण के नाना उग्रसेन के समय में भी इस नगर का अस्तित्व था। उग्रसेन के पुत्र व श्री कृष्ण के मामा कंस के समय में यहॉ राजनैतिक विद्रोहियों को रखने के लिए एक विशाल कारागार था। आगरा नगर की कुछ झलक हमें प्रसिद्ध आक्रांता महमूद गजनवी के वंशज इब्राहिम गजनवी (1054ई0 से 1099ई0) के काल में 1080ई0 में देखने को मिलती है। इसका विवरण हमें 12वीं सदी के समकालीन कवि 'मसूद सलमान द्वारा रचित कविता में देखने को मिलता है'[3] लेकिन इसके बाद आगरा गुमनामो के अधेरे में छिप गया।

परन्तु 16वीं सदी के आरम्भ में इस शहर की स्थिति में महत्वपूर्ण परिर्वतन आया। जब लोदी वंश के द्वितीय शासक सिकन्दर लोदी ने आगरा शहर को अपनी सैनिक छावनी बनाने का निश्चय किया क्योंकि उसे ग्वालियर, धौलपुर एवं मालवा को जीतना था। इस सम्बन्ध में एक रोचक तथ्य नियामतुल्ला ने अपनी पुस्तक में इस प्रकार दिया है कि 'यमुना किनारे इस स्थान को देखने के पश्चात इसका उपयोग किस तरह सैनिक मुख्यालय, सरकार स्थापना तथा विद्रोहियों की रोकथाम के लिए हो सकता है, निश्चित करना चाहता था। इस बात को ध्यान में रखते हुये 1504 ई0 में सुल्तान

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

ने इस स्थान की उपयोगिता को पता लगाने के उदेश्य से कुछ महत्वपूर्ण अधिकारियों व विषेशज्ञों को सबसे उपयुक्त स्थान, जो इस कार्य के लिए महत्वपूर्ण हो, अण्वेषण करने तथा उसकी जानकारी सुल्तान को देने के लिए नियुक्त किया। इस दल ने दिल्ली से नाव द्वारा आगरा के लिए प्रस्थान किया तथा मार्ग में दोनो किनारों का सूक्ष्म निरीक्षण करते हुए उस स्थान पर पहुॅचे जहॉ यह शहर स्थित है, जिसे चुनने के बाद अपनी इच्छा से सुल्तान को अवगत कराया। सुल्तान ने स्वयं भी इसका अवोकन किया। यहॉ पहुॅचने के बाद उसने शाही सवारी ले जाने वाले प्रमुख मेहतर मुल्लाखान से पूछा कि कौन सा स्थान उपयुक्त है। उसने उत्तर दिया ''आगे–राह'' जिससे तात्पर्य आगे की ओर रास्ते में। सुल्तान इस पर मुस्कराया और कहा कि शहर का नाम 'आगे–राह' हो सकता है। 'इस महत्वपूर्ण अवसर पर शहर स्थापना के आदेश दे दिए गए'।[4] यह तथ्य ऐतिहासिक दृष्टि से विश्वसनीय नहीं हो सकता लेकिन सिकन्दर लोदी से पूर्व यह नगर भारत के मानचित्र पर नहीं था।

लोदी कालीन आगरा की नींव यमुना के पूर्वी तट पर बांई ओर रची गई। यहॉ उसने ईटों के किले का निर्माण भी कराया जिसके अवशेष उन्नीसवीं सदी के अन्त तक देखे जा सकते थे। इस किले में राजकीय इमारतों जिनमें दफ्तर दुकान तथा उच्च लोगों, दरबारियों तथा व्यापारियों के लिए निवास स्थान भी थे, बनवाए अनेक कलाकार व विद्यार्थी वर्ग यहॉ लाये गए। अतः शीघ्र ही यह भारत का महत्वपूर्ण इस्लामी प्रशिक्षण केन्द्र बन गया।

लोदी वंश के पतन के बाद भी आगरा उत्तर प्रदेश की राजधानी के रूप में बना रहा। मुगल साम्राज्य की स्थापना के बाद अकबर तथा उसके दो उत्तराधिकारियों के लिए यह भारत का अति महत्वपूर्ण नगर बन गया। बाबर ने भी आगरा को अपने निवास स्थान के रूप में चुना तथा यहॉ कुछ बेशकीमती महल, स्नानागार, तथा सुन्दर बाग लगवाये। हुॅमायु (1530 ई0 – 1556 ई0) तथा उसके विरोधी शेरशाह सूरी (1540– 1545 ई0) ने भी आगरा को अपने राजधानी के रूप में चुना।

अकबर ने (1556–1605 ई0) आगरा के पश्चिमी तट पर लाल पत्थरो का किला स्थापित करवाया जिसमें निवास स्थान, कार्यालय तथा अनेक बागों की स्थापना करवाई। इस प्रकार मुगलकालीन आगरा यमुना के पश्चिमी तट पर स्थापित हुआ। अकबर के समकालीन दरबारी इतिहासकार अबुल फजल लिखता है कि ''आगरा एक विशाल शहर है जिसका खूबसूरत वातावरण है शहर से पॉच कोस तक यमुना बहती है दोनों तटों पर आकर्षक निवास स्थान तथा फैले हुए घास के मैदान है यहॉ संसार के विभिन्न लोगों का समागम है तथा संसार के वाणिज्य का यह प्रमुख केन्द्र है। शंहशाह ने एक चुने के लाल पत्थर के किले का निर्माण करवाया है इस प्रकार के निर्माण का वर्णन इससे पूर्व कभी भी किसी यात्री ने नहीं किया।[5]

प्रारम्भिक यूरोपीय यात्रियों में जिनमें राल्फ फिंच, जान हाकिन्स, एडवर्ड टेरी और अन्य ने उपरोक्त विवरण की पुष्टि की है। राल्फ फिंच ने 1585 ई0 में इस नगर का भ्रमण किया लिखता है

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कि ''आगरा एक महान तथा बड़ी आबादी वाला शहर है पत्थरों से निर्मित इसकी साफ तथा बड़ी सड़के है जिसके बीच से एक सुन्दर नदी बहती है। जो बंगाल की खाड़ी में गिरती है।''[6] एक अन्य यात्री विलियम फिंच जो सत्रहवीं सदी में आगरा आया लिखता है कि ''यह एक विशाल लम्बा तथा कल्पना से परे आबादी वाला शहर है। इसमें चलना फिरना कठिन है। इसका कुछ भाग संकुचित तथा गंदा है कुछ बाजारों को छोड़कर अन्य बड़े साफ है। शहर एक अर्थचन्द्राकार के रूप में स्थित है।[7] जहांगीर ने लिखा है कि ''आगरा का निवासीय भाग यमुना के दोनों ओर फैला हुआ है इसकी परिधि नौ कोस लम्बी व एक कोस चौड़ी है। जबकि दूसरे पूर्वी भाग की जिसकी जनसंख्या अधिक है ढाई कोस लम्बी है। इसके भवनों की संख्या ईरान, खुरासान, ट्रासं आक्सीनिया के कई शहरों के समान है। कई लोगों ने चार मंजिला भवन भी बनाए है। जनसंख्या इतनी है कि बाजारों व गलियों से गुजरना कठिन है।[8]'' शाहजहां ने यद्यपि दिल्ली को अपना शहर चुना परन्तु उसका अधिकांश समय आगरा में ही व्यतीत हुआ। उसके द्वारा निर्मित ताजमहल ने उसे व नगर को संसार में प्रसिद्ध कर दिया। आगरा किले में उसने अनेक लाल पत्थरों से निर्मित भवनों को ध्वस्त कर उसके स्थान पर सफेद संगमरमर की इमारतें भी बनवाई। शाहजहां के समय में आगरा पूर्व भारत की नई सभ्यता का महत्वपूर्ण केन्द्र बन गया। शाहजहां की मृत्यु के बाद औरंगजेब ने अपना दरबार दिल्ली स्थापित कर लिया और इस प्रकार इस शहर की शाही महत्वता गिर गई।

अकबर के शासन काल के दौरान आगरा विभिन्न गतिविधियों का केन्द्र रहा। उसने यहॉ निवास करने वाले हिन्दू मुस्लिमों में साम्प्रदायिक सौहार्द स्थापित करने का प्रयास किया। सम्पूर्ण साम्राज्य को उसने एक प्रशासन मुद्रा, कानून की व्यवस्था पर एक सूत्र में पिरो दिया। फारसी भाषा को राष्ट्रीय भाषा घोषित कर उसे जानना सभी के लिए अनिवार्य कर दिया। संस्कृत तथा फारसी के ग्रंथों को एक दूसरी भाषा में अनुवाद करवाया। हिन्दी कविताओं तथा कवियों के लिए यह युग के रूप में जाना जाता है। सूर, केशव, तुलसी, रसखान भूषण, रहीम कवियों ने अपनी कविताओं द्वारा इस युग को महान बना दिया। अकबर को केवल प्रशासनिक, राजनैतिक, साहित्यिक कार्यों तक ही सीमित नहीं रखा जा सकता। इन कार्यों के अतिरिक्त उसने सांस्कृतिक, धार्मिक कार्यों के साथ–साथ स्थापत्य कला पर भी ध्यान दिया। उसके द्वारा निर्मित आगरा किला की तुलना ग्वालियर किले से की जाती है। अकबर महल, जहॉगीरी महल, हिन्दू मुस्लिम स्थापत्य कला के गठजोड़ का शानदार नमूना है। अकबर द्वारा आगरा व फतेहपुर सीकरी में अपनाई गई स्थापत्य कला का बेजोड़ नमूना सम्पूर्ण उत्तर भारत में फैल गया इसकी छाप समस्त देश के साथ राजस्थान, बुंदेलखंड की इमारतों में देखने को मिलती है। अकबर कालीन आम्बेर, बीकानेर, ओरछा, जोधपुर के महल मुगल छाप में किसी से कम नहीं है। 'इन इमारतों को देखने के पश्चात जानने में कोई कठिनाई नहीं होती कि किस प्रकार आरम्भिक मुगलों की पत्थरों में दातेदार तोडों कांच का जड़ाऊ काम, रंगीन प्लास्टर,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सोने का पानी चड़ा काम और अधिक सुन्दर बनाने के लिए उपयोग किया जाने लगा।[9,] स्थापत्य कला के साथ संगीत कला की जड़े भी आगरा में रहीं। संगीत प्रेमी होने के कारण ही अकबर ने अपने शासन के आरम्भिक दिनों में तानसेन को रीवा से आगरा बुलवाया तथा दरबार में उसे उच्च स्थान दिया। इसके अतिरिक्त सूरदास वैजूवावरा, रामदास महान संगीतकार की श्रेणी में आते थे। अकबर के समय में आगरा राष्ट्रीय संगीत का प्रमुख केन्द्र बन गया।

मुगल साम्राज्य के पतन के समय आगरा उत्तर भारत के अन्य राज्यों की तरह अनिश्चिय तथा असुरक्षा के वातावरण में घिर गया। सत्रहवीं सदी के अंत में औरंगजेब को कट्टर हिन्दू विरोधी नीति के खिलाफ शक्तिशाली जाट विद्रोह हुए। मुगलों के खिलाफ चूरामणी ने स्पष्ट विद्रोह किया और 1721ई0 में नीलकांत नागर जो आगरा के उप–राज्यपाल थे पराजित कर उसका वध कर दिया। लेकिन जयपुर के राजाराम सिंह जो आगरा के दूसरे राज्यपाल बने जाटों में फूट डालकर कुछ हद तक जाट विद्राहों को दबाने का सफल प्रयत्न किया। लेकिन अहमदशाह अब्दाली तथा नादिरशाह के निरन्तर आक्रमणों के कारण साम्राज्य का पराभाव हुआ और इसने एक बार फिर जाटों को सिर उठाने का अवसर प्रदान किया। 'अहमद शाह अब्दाली के सेनानायक जहांखान ने आगरा को उजाड़ कर 1757 ई0 में किले की घेराबंदी कर ली[10,] साम्राज्य कमजोर हो गया और इस दौरान आगरा पर मराठाओं का अधिकार हो गया जब तक कि ये 1761 ई0 में पानीपत के तृतीय युद्ध में पराजित होने पर अस्थाई रूप से दक्षिण में न चले गए। इस बीच जाट राजा सूरजमल ने यहॉ अधिकार कर लिया। उसने साम्राज्य के सबसे धनी शहर के किले पर अपना अधिकार कर लिया। आगरा किले ने अभी भी अपने द्वार किसी दुर्रानी के लिए नहीं खोले। 'दिल्ली से भागने वाले धनी लोगों ने आगरा में शरण ले ली क्योंकि अशांति के समय भारत में यह व्यापार के लिए सबसे अच्छा केन्द्र था। अकबर के साम्राज्य से मुगलों द्वारा एकत्रित धन आगरा किले में एकत्रित हो चुका था। यद्यपि इसमें से अधिकांश औरंगजेब के लम्बे युद्धों तथा उसके उत्तराधिकारियों की असुरक्षा के कारण नष्ट हो गया था फिर भी उनमें से राजा के उपयोगी वस्तुऐं लूट का कीमती सामान, लकडी का सामान, जेवरात आदि थे। जून 1761 में किले पर अधिकार होने के बाद सूरजमल इसमें से अधिकांश धन भरतपुर व डींग ले गए।[11,]

1772 ई0 में मराठा अपनी पराजय से उबर चुके थे। अतः वे उत्तर भारत की ओर लौटे तथा समस्त दोआब क्षेत्र के साथ आगरा पर भी अपना अधिकार कर लिया। परन्तु 1773 ई0 में पेशवा माधवराव की जल्दी मृत्यु हो जाने के कारण उन्हें एक बार फिर उत्तर भारत को त्यागना पड़ा। जाट राजा नवल सिंह ने परिस्थितियों का फायदा उठाते हुये आगरा पर अपना अधिकार कर लिया। लेकिन जाट शासन अधिक न चल सका क्योंकि फरवरी 1774 ई0 शाह आलम द्वितीय के प्रधानमंत्री मिर्जा नजफ खाँ ने शहर व किले पर अपना अधिकार कर लिया। नवम्बर 1784 ई0 में मराठा, प्रमुख,

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

महदजी सिंधिया मुगल शासक के वकील–ए–मुतलक बने। उसने हमदानी को 1755 में आगरा से बर्खास्त कर किले पर अपना अधिकार कर लिया। उसने अपने मुख्यालय ग्वालियर से आगरा पर, अपने सबसे योग्य सेनापति के द्वारा शासन किया। इस प्रकार 1784 से 1798 ई0 तक महदजी सिधिंया के नेतृत्व में मराठाओं का शहर व आगरा किले पर अधिकार बना रहा। इस दौरान अनेक संघर्ष होते रहे तथा दौलतराव व जसवंतराव होलकर में उस समय विवाद हो गया जब लार्ड बेलेज़ली भारत में स्थाई शासन पर विचार कर रहा था। इधर 1803 ई0 में लार्ड लेक ने सिधिंया के फ्रेंच सेनापति को अलीगढ़ के बाहर पराजित किया। अलीगढ़ के बाद उसने मथुरा पर भी अपना कब्जा कर लिया तथा 9 अक्टूबर को उसने आगरा शहर तथा किले के आगे घेरा डाल दिया तथा उस पर अधिकार कर लिया। मराठा दुर्ग रक्षकों किले में फ्रेंच कमांडर की नीयत पर शक था अतः उन्होंने उसके खिलाफ सैनिक विद्रोह कर दिया। 1803 ई0 बिग्रेडियर जनरल क्लार्क ने पूरे क्षेत्र तथा किले पर अधिकार रखा। और अग्रेजों को तुरन्त ही गोली चलाने का आदेश देना पड़ा इसके परिणाम स्वरूप 17 अक्टूबर 1803 ई0 को किले के दक्षिण पूर्व भाग में दरार बन गई यद्यपि मराठाओं ने अपनी ओर से भरपूर प्रयास किया परन्तु लार्ड की विजयी सेना अमर सिंह द्वार से किले में प्रवेश कर गई। इस प्रकार मराठाओं का 18 वर्षों से आगरा पर चला आ रहा अधिकार समाप्त हो गया। आगरा में लगभग दो वर्षों तक फिर एक प्रकार से सैनिक शासन हो गया।

1805 ई0 में यह नगर एक जिले के रूप में स्थापित किया गया तथा यह कलक्टर के अधीन आ गया। ब्रिटिश ईस्ट इण्डिया कम्पनी ने जो राज्य अवध व मध्यकालीन भारतीय राज्यों से प्राप्त किये थे वे एक राज्य के रूप में कलकत्ता प्रेसीडेंसी के अधीन रख दिये। इन राज्यों का मुख्यालय फर्रूखाबाद निश्चित हुआ। कलक्टर को प्रशासनिक व आर्थिक दोनों प्रकार के अधिकार मिले तथा उसके सहयोग के लिए उनके अधीन विभिन्न विभाग व कर्मचारी रहे। जिले को तहसील में बॉट दिया गया इन तहसीलों के प्रमुख तहसीलदार होते थे वे जनता से सीधा सम्पर्क रखते तथा सरकार के लिए राजस्व इकट्ठा करते थे। परन्तु कलक्टर बहुत कम जनता से सीधा सम्पर्क करते थे। इस प्रकार राज्य का कार्य चलता था। 1805 ई0 से 1833 ई0 के मध्य में आगरा विषय में बहुत ही कम जानकारी मिलती है।

सन् 1833 में आगरा के ऊपर छाये दुर्भाग्य के बादल छटे। क्योंकि अंग्रेजी संसद ने चौथीबार भारत में प्रेसीडेंसी स्थापित करने का विचार किया। 1833 ई0 के अधिनियम ने बंगाल प्रेसीडेंसी को बंगाल में फोर्टविलियम प्रेसीडेंसी में विभाजित कर दिया। आगरा प्रेसीडेंसी के अन्तर्गत दोआब, रूहेलखंड, गोरखपुर, इलाहाबाद तथा जबलपुर आये। इस नई प्रेसीडेंसी का प्रमुख गवर्नर बनाया गया तथा सरकारी कामों में उसे सहयोग देने के लिए तीन परिषदें स्थापित की गई। मेटकॉफ 20 नवम्बर 1834 में इस नई प्रेसीडेसी के गवर्नर बने तथा चार कार्यकारी काउन्सलर भी उनके साथ नियुक्त हुए

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

परन्तु ये काउन्सलर कभी अपने कार्यालय नहीं गये अतः गवर्नर को अकेले ही कार्य करना पड़ा। आगरा प्रेसीडेसी का मुख्यालय इलाहाबाद बनाया गया। इस प्रेसीडेसी के अधीन प्रशासनिक सेवा स्तर के 199 अधिकारी तथा उनके 76 सहायक थे। परन्तु इस नई व्यवस्था से कोर्ट आफ डायरेक्टर अप्रसन्न थे। अतः कोर्ट आफ डायरेक्टर ने 1833 के चार्टर एक्ट की धारा 38 को जिसने आगरा को अलग प्रेसीडेंसी बनाया था रद्द कर दिया। इस प्रकार आगरा प्रेसीडेंसी पुनः नार्थ वेस्ट प्रोविसेंस के रूप में जानी गई तथा बंगाल प्रेसीडेंसी की सरकार की सहायक बन गई। आगरा प्रेसीडेंसी का गर्वनर अब लेफ्टिनेट गर्वनर बन गया। इस परिवर्तन के बाद 13 नवम्बर 1835 को अलक्जेंडर रोज उत्तर पश्चिम राज्यों को राजधानी का नया लेफीटिनेंट गवर्नर बना। उसके तथा उसके सहयोगियों के अधिकार तथा कार्य क्षेत्र में कोई परिवर्तन नहीं हुआ। इसका वेतन बम्बई तथा मद्रास के गर्वनर के समान रहा और इस प्रकार राज्य की राजधानी इलाहाबाद से पुनः आगरा स्थापित हो गई। इसे पुनः छः राज्य 1. दिल्ली 2. मेरठ 3. रूहेलखण्ड 4. आगरा 5. इलाहाबाद 6. बनारस थे। आगरा के अन्तर्गत–आगरा जिला, मथुरा, फर्रूखाबाद, मैंनपुरी व इटावा आए। सम्पूर्ण राज्यों को रेग्यूलेशन क्षेत्र तथा नान रेग्यूलेशन क्षेत्र विभाजित कर दिया गया।[12]

मेटकाफ के शासनकाल के दौरान आगरा में चेचक तथा प्लेग की महामारी फौल गई इसे रोकने का पूरी तरह प्रयास किया गया। 1837–38 के दौरन यहाँ वर्षा हो पाने के कारण आगरा परिक्षेत्र में भारी सूखा पड़ गया। सरकारी प्रयासों के बाबजूद भी लगभग अस्सी हजार लोग भूख से मर गए। सरकारी सहायता के अतिरिक्त कुछ संस्थाओं द्वारा भी भूख से मरने वालों को बचाने का प्रयास किया। इसके पश्चात् आगरा में सबसे लोकप्रिय ले0 गवर्नर जेम्स थामसन आया और इसने 1843–53 तक दस वर्षो में अपना कार्यकाल पूरा किया। 1843 में बरेली में उनका निधन हो गया। उसने लोगों की भलाई के लिए अनेक कार्य किए। उसने बड़ी संख्या में स्कूलों की स्थापना करवाई। रूढ़की में उसने एक इंजीनियरिंग कालेज की स्थापना की जिन्हें बाद में उसके नाम में परिवर्तित कर दिया गया।

जान स्सैल काल्विन के कार्यकाल के दौरान 1857–58 में सैनिक विद्रोह हुआ जो आगरा में भी फैला। आगरा का अन्य राज्यों से सम्बन्ध टूट गया। गवर्नर ने अन्य यूरोपीय लोगों के साथ किले में शरण ली। वह इतना मानसिक रूप से अशांत हो गया कि उसकी मृत्यु हो गई, उसे किले में ही दीवान–ए–आम के सामने जमींदौज कर दिया गया। इस बात पर लगभग तीन माह तक सब खामोश रहे अक्टूबर 1858 ई0 में मेजर काटन ने सभी विद्रोहियों को फतेहपुर सीकरी से खदेड़ दिया गया इस प्रकार जिले में शान्ति स्थापित हुई।

अठाहरवी सदी के अंतिम भाग तथा उन्नीसवी सदी के आरम्भिक वर्षो के बीच इस नगर को अनेक उतार चढ़ाव देखने पड़े। अकबर के शासन काल के दौरान इस राज्य की जन संख्या लगभग

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

दो लाख के करीब थी जो 1838 में 35000 के करीब रह गई। मुगलकालीन आगरा का क्षेत्र 1838 की अपेक्षा लगभग दस गुना ज्यादा था वे भाग जो उपजाऊ मैदान है पहले लोगों से भरे हुए घर थे। किले से ताज तक यमुना नदी के दूसरे किनारे पर सम्पूर्ण स्थान महत्वपूर्ण भवनों की श्रृंखला से घिरे हुये थे।[13]

सन् 1839 तक शहर लगभग चार मील लम्बाई में व 9 मील चौड़ाई में विस्तृत हो गया था। कोतवाली शहर के मध्य में स्थित थी। किले से छावनी तक एक अच्छी सड़क बन चुकी थी। छावनी क्षेत्र में मुख्य रूप से ईसाई व सैनिक अधिकारी रहते थे। छावनी क्षेत्र से लगभग तीन मील की दूरी पर सरकारी भवन स्थित था जिसे मैंटकाफ ने अपने कार्यालय तथा व्यक्तिगत सचिव के निवास के लिए दो और भागों में विस्तृत किया था। आगरा में एक छापा खाना था जो आगरा प्रेस के नाम से जाना जाता था। इसके अतिरिक्त इलाहाबाद व लुधियाना को छोड़कर आसपास कोई छापा खाना नहीं था। प्रारम्भ में एक सुविधा की दृष्टि से बनाया गया था लेकिन बाद में इसे सभी लोगों के उपयोग के लिए खोल दिया गया। दो अन्य महत्वपूर्ण इमारतें जो प्रथम लेफ्टीनेंट गवर्नर मेटकाफ द्वारा बनावाई गई, इसमें दो कमरे तथा एक पृथक पुस्तकालय था तथा दूसरा चर्च था जिसमें लगभग 800 से 1000 लोग आ सकते थे। सिकन्दरा के निकट एक अनाथालय था जिसका निर्माण क्रश्चियन मिशन द्वारा 1837–38 के अकाल के दौरान बनवाया गया था। इस समय आगरा में बहुत कम अमीर थे जो लोग अमीर थे वे व्यापार की दृष्टि से आगरा आकर बस गए थे।

''आगरा में एक भीख मॉगने वाली मण्डली थी जिनमें मुख्य रूप से मुसलमान थे जो शाहगंज में रहते थे जिसे उन्होने अपने लिए घेरा हुआ था।''[14]

आगामी चालीस वर्षों में आगरा में जन–संख्या, सम्पत्ति व शिक्षा की दृष्टि से प्रशांसनीय विकास हुआ। सन् 1853 में इसकी जन संख्या 1,25,262 थी जो 1865 मे 1,42,661, हो गई। 'इस प्रकार यह जनसंख्या की दृष्टि से नॉर्थ वेस्ट प्राविंसेज में दूसरा बड़ा शहर बन गया।[15] 1838 में यहॉ केवल एक आगरा बैंक थी लेकिन बाद में बैंक ऑफ बंगाल भी खुल गया। सन् 1850 में सेंट जोन्स कॉलेज की स्थापना हुई। परन्तु इसमें शिक्षण कार्य दो वर्ष बाद आरम्भ हो सका। 1854 मे थामसन अस्पताल की इसकी विभिन्न शाखाओं के साथ स्थापना हुई। इसके एक वर्ष बाद सन् 1855 में मेडिकल स्कूल भी स्थापित हुआ। आगरा में इस समय पाँच प्रमुख समाचार पत्रों आगरा अखबार, तेरहवीं सदी, ननीम–ए–आगरा, भारतीय विलास, तथा हरूयात–ए–तविदानी आदि का प्रकाशन होता था। सन् 1868 में एक बार फिर नॉर्थ वेस्ट प्रोविंसेज, का राजधानी आगरा को हटाकर इलाहाबाद कर दिया गया, तथा सन् 1839 में उच्च न्यायालय भी इलाहाबाद स्थानान्तरित कर दिया गया। इसके साथ ही अन्य महत्वपूर्ण विभाग भी इस शहर से हटा लिए गए। आगरा की पहचान पुनः सिर्फ एक

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

कमिश्नरी के रूप में रह गयी। आगरा में समय–समय पर अनके महत्वपूर्ण लोगों ने जिनमें लार्ड केनिंग, लार्ड एल्विन, जान लारेंस आदि थे, भ्रमण किया। सन् 1891 में लार्ड लेंइसडाऊन ने यहॉ जलकल विभाग भी स्थापित करवाया।

अकबर कालीन प्राचीन आगरा मुख्य रूप से कचहरीघाट, बेलनगंज रावतपाड़ा, पीपलमन्डी तक ही सीमित रहा। किनारी बाजार व जौहरी बाजार अकबर जहाँगीर के समय में मुख्य बाजार थे जो आज भी उतने ही महत्वपूर्ण है। परन्तु अंग्रेजी शासन के दौरान कुछ नये क्षेत्रों में भी लोगों ने रहना आरम्भ कर दिया। लोग स्वदेशी बीमा नगर, ईदगाह कॉलोनी, विजय नगर में भी निवास करने लगे। मालवीय कुँज में मुख्यता पाकिस्तान से आये शरणार्थी लोग ही थे। प्रथम जनगणना से आधुनिक समय तक प्रारम्भ से ही हिन्दू मुस्लिम यहाँ रह रहे है। आरम्भ में मुस्लिम जनसंख्या अधिक थी परन्तु बाद में इसके अनुपात में बहुत कमी आ गई। हिन्दूओं के साथ यहाँ ईसाई, पारसी, जाट, कायस्थ आदि भी थे। सभी जातियाँ सामंजस्य से रहीं व अभी भी मिलजुलकर रह रही है। हिन्दी भाषा के अतिरिक्त उर्दू व ब्रजभाषा भी सुनने का अवसर यहॉ मिलता है। सन् 1880 से पूर्व तक यहॉ का पहनावा मुख्य रूप से धोती, कुर्ता व महिलाओं में साड़ी था। मुस्लिम अपने को मुगलों का वंशज समझते थे उनमें मुगलकालीन चिन्ह स्पष्ट दिखाई देते थे। परन्तु इसके बाद अन्य उत्तर–पश्चिमी राज्यों की तरह यहॉ भी आधुनिक परिधानों की स्पष्ट साफ दिखाई देने लगी। आधुनिक समय में व्यापार वाणिज्य की दृष्टि से तथा पर्यटन की महत्वता को देखते हुए इस शहर को अन्य महानगरों से रेल तथा बस सेवा द्वारा जोड़ा गया है। आगरा का विकास तेज गति से हुआ। व्यापार, वाणिज्य, शिक्षा आदि क्षेत्रों में महत्वपूर्ण विकास देखने को मिलता है।

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9 Issue 4, April 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

संदर्भ–सूची

1. मजूमदार, तुजुक–ए–बाबरी, अनु0 मथुरा लाल शर्मा, पृ0 68–69।
2. हमीदा खातून नकवी, अर्बन सेन्टर्स एण्ड इण्डस्ट्रीज इन अपर इण्डिया (1556–1803), बम्बई, 1963, पृ0 17।
3. 'दीवान–ए–सलमान' इलियट–हाउसन ग्र0 4 पृ0 522–524
   'तुजुक–ए–जहॉगीरी' अनुवाद बेवरिज ग्र0 1 पृ0 4
4. 'मक्जान–ए–अफगानी' इलियट–डाइसन 5 ग्र0 पृ0 99
5. 'आइन–ए–अकबरी' अबुल फजल ग्र0 2 पृ0 190–91
6. 'अली ट्रेवल्स इन इन्डिया फोस्टर पृ0 15–18
7. अर्ली ट्रेवल्स इन इन्डिया फोस्टर पृ0 182
8. तुजुक–ए–जहॉगीरी अनुवाद–रोजर्स वेवरिज ग्र0 1पृ0 3
9. कैम्ब्रिज हिस्ट्री ऑफ इन्डिया ग्र0 पृ0 548
10. फाल ऑफ द मुगल एम्पायर युदनाथ सरकार अनुवाद मथुरा लाल शर्मा ग्र0 2 पृ0 75
11. फाल ऑफ द मुगल एम्पायर यदुनाथ सरकार ग्र0 2 पृ0 324–25
12. हिस्ट्री ऑफ जाट के0आर0 कानूनगो ग्र0 1 पृ0 269
13. कलकत्ता ऐन्ड आगरा गजेटियर ग्र0 1 पृ0 114
14. कलकत्ता ऐन्ड आगरा गजेटियर ग्र0 1 पृ0 125
15. नार्थ वेस्ट प्राविंसेज गजेटियर, एटकिंस ग्र0 पृ0 673